प्रशिक्षण कार्यक्रम " वन पारिस्थितिकी तंत्र की तितलियों सहित कीड़ों की परिस्थितिकी और जैविक नियंत्रण " हिमालय वन अनुसंधान संस्थान, शिमला में, हिमाचल प्रदेश राज्य वन विभाग अधिकारियों और विश्वविद्यालय / कॉलेज के छात्रों के लिये तीन दिनों का विवरण हैं।

(29th to 31st अगस्त, 2016)

जैव विविधता को जीवन की भिन्नता के स्तर के रूप में मापा गया है, और तदनुसार विभिन्न पौधे और पशु प्रजातिय सभी रूपों लिए एक दूसरे के सुनिश्चित प्राकृतिक स्थिरता पर निर्भर करते हैं। कीट विविधता हमारे जैव विविधता का लगभग 75 फीसदी जीवों का सबसे बड़ा समूह हैं जिसमें दोनों लाभकारी और हानिकारक प्रजातियों सम्मिलित हैं, वन नर्सरी और वृक्षारोपण में कीट द्वारा नुकसान की भयावहता को कम करने के लिए पारिस्थितिकी तंत्र और हानिकारक कीड़ों की पहचान का एक अच्छा ज्ञान प्रभावी नियंत्रण के उपायों को विकसित करने के लिए महत्वपूर्ण है।

इस संबंध में, हिमालय वन अनुसंधान संस्थान, शिमला के डॉ पवन राणा, वैज्ञानिक डी (वन कीट विज्ञान) के प्रत्यक्ष समन्वय के तहत तीन दिनों का प्रशिक्षण कार्यक्रम " वन पारिस्थितिकी तंत्र की तितलियों सहित कीड़ों की परिस्थितिकी और जैविक नियंत्रण ", पर "पश्चिमी हिमालय उप अल्पाइन वन पारिस्थितिकी तंत्र में तितलियों के वितरण पैटर्न और खाद्य संयंत्र संसाधनों का पारिस्थितिक अध्ययन" परियोजना के अंतर्गत आयोजित किया गया हैं । जिसमें राज्य वन विभाग के क्षेत्र पदाधिकारियों और महाविधालय के छात्र छात्रा संयुक्त थे। जिससे कि वन पारिस्थितिकी तंत्र में तितलियों के महत्व और वन पारिस्थितिकी तंत्र के प्रबंधन में उनके महत्व के बारे में जागरूकता और अधिक ध्यान केंद्रित तरह से अंत उपयोगकर्ताओं समूह तक सफलतापूर्वक पहुँच जाये।

पहले दिन 29वें अगस्त 2016

डॉ पवन राणा, वैज्ञानिक डी और प्रशिक्षण के समन्वयक, शुरू में मुख्य अतिथि और निदेशक डॉ वी.पी. तिवारी, हिमालय वन अनुसंधान संस्थान, शिमला का स्वागत किया और उद्घाटन भाषण में डॉ तिवारी ने प्रतिभागियों कि हिमालयी वन अनुसंधान संस्थान अनुसंधान गतिविधियों के अलावा भी हितधारकों के समग्र लाभ के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन अवगत कराया। उन्होंने कहा, इसलिए, क्षेत्र के कार्यकर्ताओं को जनता के हित की विभिन्न योजनाओं में शामिल कर के कीटों और इस तरह के प्रशिक्षण प्रोग्रामर की व्यापक रेंज के जैविक नियंत्रण के कुशल मानव प्रबंधन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। डॉ पवन कुमार, वैज्ञानिक और उद्घाटन सत्र के दौरान प्रशिक्षण के समन्वयक, मुद्दों और

कीटों और उनके जैविक नियंत्रण से संबंधित चिंताओं पर सभा को संबोधित किया। उन्होंने तीन दिवसीय के प्रशिक्षण में क्षेत्र और प्रयोगशाला काम के तकनीकी सत्र के बारे प्रतिभागियों को में परिचित किया। इसके बाद डॉ रंजीत सिंह वन संरक्षण विभाग के प्रमुख ने "वर्तमान स्थितियों में कीटविज्ञान मुद्दे पर प्रशिक्षण का महत्व" पर एक संक्षिप्त भाषण दिया। इसके बाद डॉ भारद्वाज, पूर्व कुलपति ने "तितलियों की पारिस्थितिकीय" विषय पर जानकारी दी। इसके पश्चात, डॉ अश्विनी, वैज्ञानिक ई, हिमालय वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने "वन और उनके पर्यावरण के अनुकूल प्रबंधन के रोगों" पर व्याख्यान दिया।

दूसरे दिन से 30 अगस्त, 2016

दूसरे दिन, क्षेत्र की यात्रा का आयोजन किया गया और प्रतिभागियों को संस्थान के फील्ड रिसर्च स्टेशन, नरकंडा वन क्षेत्र, जिले शिमला में ले जाया गया। डॉ पवन राणा, प्रशिक्षण समन्वयक और उनकी टीम ने प्रशिक्षुओं को विशेष रूप से Lepidoptera पर जानकारी दी और साथ साथ कीड़ों की पहचान और संग्रह तकनीकों का प्रदर्शन किया।

तीसरे दिन 31 वें अगस्त, 2016

प्रशिक्षुओं को वन संरक्षण विभाग की प्रयोगशाला में ले जाया गया और अनुसंधान तितलियों पर किए गए कार्य से परिचित कराया गया था। पूर्वाह्न में डॉ अनिल सूद, यशवंत सिंह परमार विश्वविद्यालय, सोलन, के प्रोफ़ेसर ने अपनी प्रस्तुति में पर "वानिकी कीट के संबंध में जलवायु परिवर्तन और उनके प्रबंधन" पर जानकारी दी। इसके बाद, डॉ रंजीत कुमार, वैज्ञानिक ई, हिमालय वन अनुसंधान संस्थान, "जैव विविधता और इसके संरक्षण" के विषय पर प्रतिभागियों को जानकारी दी।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के पूर्ण अधिवेशन पर डॉ के एस कपूर, समूह समन्वयक अनुसंधान, हिमालय वन अनुसंधान संस्थान और डॉ रंजीत सिंह, वन संरक्षण विभाग के प्रमुख के ने प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र से सम्मानित किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम की परिणति पर डॉ पवन राणा, प्रशिक्षण समन्वयक ने प्रशिक्षु और आयोजकों को धन्यवाद दिया।

प्रशिक्षण की झलक

पहला दिन

दूसरा दिन

तीसरा दिन

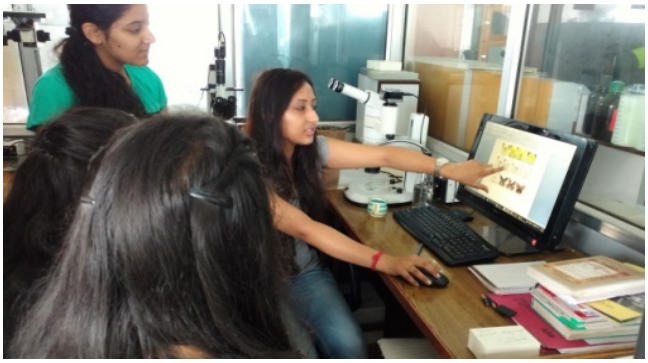

8-31-2016 11:07

Training On
8-31-2016 15:30

Training On
ECOLOGY & BIOLOGICAL CONTROL OF INSECTS
INCLUDING BUTTERFLIES IN FOREST ECOSYSTEM
Under The Research Project
"Ecological Studies On Distribution Patterns And Food Plant Resources
Of Butterflies Along Altitudinal Gradients In Different Ecosystems Of

The Research Project

मीडिया कवरेज

dainikbhaskar.com

Sponsored Link

Dai दैनिक भास्कर - 30-Aug. 201

एचएफआरआई में वन विभाग के स्टाफ के लिए प्रशिक्षण शुरू

वन विभाग से जुड़े विभिन्न पहलुओं से करवाएंगे अवगत

सिटी रिपोर्टर | शिमला

एचएफआरआई शिमला में पर्यावरण वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय भारत सरकार के सहयोग से वन विभाग के फील्ड स्टाफ एवं जिला शिमला के विभिन्न महाविद्यालयों के विद्यार्थियों की दक्षता अभिवृद्धि के लिए सोमवार को तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डॉ. वीपी तिवारी ने बतौर मुख्यातिथि शिरकत की। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में लगभग 25 प्रतिभागी भाग ले रहें है।

कार्यक्रम के दौरान संस्थान व नौणी यूनिवर्सिटी से विभिन्न वैज्ञानिक प्रशिक्षणार्थियों को वन पारिस्थितिकी तंत्र में तितलियों सहित कीड़ों की पारिस्थितिकी और जैविक नियंत्रण पर अपने अनुसंधान अनुभवों पर आधारित व्याख्यानों से प्रशिक्षणार्थियों का मार्गदर्शन करेंगे। इस अवसर पर संस्थान के वरिष्ट वैज्ञानिक डॉ. केएस कपूर संस्थान की ओर से वानिकी अनुसंधान पर किए गए कार्यों व वर्तमान में चल रहे कार्यों पर व्याख्यान दिया। वन बचाव प्रभाग के अध्यक्ष डॉ. रणजीत ने वनों में विभिन्न कीटों के नियंत्रण के लिए जैविक नियंत्रण के महत्व पर प्रकाश डाला।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के संयोजक डॉ. पवन कुमार ने बताया कि एचएफआरआई वानिकी एवं वानिकी शोध से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर समय-समय पर इस तरह के प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करता रहता है।

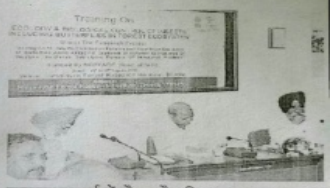

एचएफआरआई में मौजूद वैज्ञानिक।

वन कीटों के महत्त्व पर टिप्स

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान में 25 प्रतिभागी पा रहे ज्ञान

▪ दिव्य हिमाचल ब्यूरो, शिमला

▪ तीन दिवसीय शिविर में फील्ड स्टाफ-कालेज छात्रों को वैज्ञानिक देंगे जानकारी

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान पंथाघाटी शिमला द्वारा पर्यावरण वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के सहयोग से वन विभाग के फील्ड स्टाफ व शिमला के विभिन्न महाविद्यालयों के छात्रों की दक्षता अभिवृद्धि के लिए तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ सोमवार को किया। इस कार्यक्रम का समापन 31 अगस्त को होगा। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में लगभग 25 प्रतिभागी भाग ले रहे हैं। इस दौरान हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, डा. यशवंत सिंह परमार बागवानी व वानिकी विश्वविद्यालय से विभिन्न वैज्ञानिक प्रशिक्षणार्थियों को वन पारिस्थितिकी तंत्र में तितलियों सहित कीड़ों की पारिस्थितिकीय और जैविक नियंत्रण पर अपने अनुसंधान अनुभवों पर आधारित व्याख्यानों से प्रशिक्षणार्थियों का मार्गदर्शन करेंगे। इसके आलावा प्रशिक्षणार्थियों को फील्ड अनुभव प्राप्त करवाने के मकसद से शिलारू तथा नारकंडा के वन क्षेत्रों में ले जाया जाएगा। वहीं वनों में कीटों तथा अन्य प्रजीवियों की पहचान करके उनके प्रबंधन के बारे में भी अवगत करवाया जाएगा। इसके साथ-साथ प्रशिक्षणार्थियों को हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान की वन बचाव प्रयोगशाला में विभिन्न कीटों की पहचान व प्रयोगशाला में चल रहे विभिन्न अनुसंधान कार्यों से भी अवगत करवाया जाएगा। प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन डा. वीपी तिवारी निदेशक हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला ने किया। इस अवसर पर डा. केएस कपूर, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं समूह समन्वयन अनुसंधान ने संस्थान द्वारा वानिकी अनुसंधान पर किए गए कार्यों व वर्तमान में चल रहे कार्यों पर व्याख्यान दिया। वहीं हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान वन बचाव के प्रभागाध्यक्ष डा. रणजीत सिंह ने कहा कि रासायनिक कीटनाशकों से बहुत से दुष्प्रभाव देखने को मिल रहे हैं। उन्होंने वनों में विभिन्न कीटों के नियंत्रण हेतु जैविक नियंत्रण के महत्त्व पर प्रकाश डाला।

दिव्य हिमाचल
Dated - 30 Aug 2016